ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

अलका सरावगी के कथा साहित्य में नारी विमर्श

सारांश

नारी और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बध रहा है। नारी समाज की केन्द्र बिन्दु है। समाज को नारी से प्रेम, प्रेरणा, सृष्टि और शक्ति मिलती है तो समाज से नारी को प्रतिष्ठा भी और अवमानता भी। नारी के सामाजिक मूल्यों की परख समाज और साहित्य के पल–पल परिवर्तित परिवेषों से ही हो सकती है।

हिन्दी का उपन्यास – साहित्य प्रारम्भ से ही नारी के प्रति अनुदार दृष्टिकोण लेकर चला। हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यासकारों ने जहाँ नारी के प्रतिष्ठित रूप की ओर दृष्टि डालने की चेष्टा भी की है वहाँ हिन्दु धर्म ग्रंथों की निदात्मक उक्तियां उनके सामने आकर खड़ी हो गई है। इसीलिए वे नारी को अपने हृदय की समस्त श्रद्धा देने में असमर्थ है।

मुख्य शब्द : Please add some keywords

कविता कुमारी
शोधार्थिनी,
हिन्दी विभाग,
वी. आर. जी. गर्ल्स कॉलेज,
मुरार, ग्वालियर, म.प्र.

बीना गुप्ता
मार्गदर्शिका
हिन्दी विभाग,
वी. आर. जी. गर्ल्स कॉलेज,
मुरार, ग्वालियर, म.प्र.

प्रस्तावना

भारत हिन्दी के समस्त उपन्यासों में नारी का यह विद्रोह पारिवारिक रूढ़ियों के प्रति एंव सामाजिक विषमताओं के प्रति यंत्र–तंत्र परिलक्षित होता है अब नारी को अनावयक तरीके से दबाना सम्भव नही था। नारी का व्यक्तित्व धीरे–धीरे सबल हो रहा था और अपने अधिकारों को पहचानने की जागरूक भावना ने उसे झकझोर दिया था। इस आर्थिक पराधीनता से मुक्त हुए बिना नारी उन्मुक्ति के वातावरण में साँस नही ले सकती आर्थिक पराधीनता के कारण जब नारी को स्नेह करने के लिए बाध्य किया जाता है। तब उसके मन में विद्रोह की सृष्टि होनी आवष्यक है।

डॉ. अलका सरावगी के कलिकथा वाया बायपास, शेष कादम्बरी, कोई बात नही, तथा एक ब्रेक के बाद उपन्यासों में हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं का मिश्रण है क्योंकि उन्होंने भाषा नही नारी भावों को प्रमुख माना है। नही की संवेदना में बहुत से इन्द्रधनुषी रंग है उनको पिरोना ही डॉ. अलका का बहुत बड़ा उदेद्ष्य रहा है।

अलका जी ने जहाँ एक ओर अपने परिवार यानी मारवाड़ी परिवार में स्त्री–पुरूष का चित्रण किया वही उसमें गुण, दोष, खूबियाँ, खामियाँ, अच्छाईयाँ का भी सजीव चित्रण दो टूक बातचीत किया है। भले ही भाषा में अन्य भाषाओ का मिश्रण है।

आज की नारी पिछली शताब्दीं की नारी से भिन्न अपनी स्थिति के प्रति अधिक जागरूक है अपनी सीमा और सामर्थ्य पहचान के लिये संघर्षरत होकर अर्थोपार्जन कर रही है। आर्थिक स्वावलम्बन ने उसे जो आत्म विश्वास दिया है। उसे अनदेखा नही किया जा सकता है आत्मनिर्भर नारी औसत गृहस्थ जीवन से अधिक ऊर्जा जागरूक है। और स्वप्न दृष्टा है। आर्थिक स्वावलम्बन वाली नारी गृहस्थ नारी की अपेक्षा अधिक गतिशील है।

अलका सरावगी का दूसरा उपन्यास ''षेष कादम्बरी'' की कथा कई मोडों से होकर गुजरती है। रूबी गुप्ता और उसकी नातिन कादम्बरी का आपस में सामजस्य नही है समाचार पत्रों से कादम्बरी को कोई सामाजिक न्याय की आषा नही है जबकि रूबी गुप्ता परामर्ष के तरीकों से यह सब समाधान करना चाहती है ताकि उसके परिवार की सामाजिक स्थिति मजबूत बनी रहे।

किसान और नागरिक के बिना काव्य का काम चल सकता है, किन्तु उसमें से नारी को हटाते ही उसका जीवन नष्ट हो जाता है। मेयर के इस महत्वपूर्ण कथन की सत्यता का ज्ञान तब होता है तब हम देखते है कि लगभग सभी भाषाओं के काव्य में सभी युगों में, नारी अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रही है।

नारी के सामान्य या यथथि रूप के सम्बधं में सभी भक्त कवि एक स्वर से घृणात्मक भावना की अभिव्यंजना करते है यह भावना क्रोध और हिंसा से भरी हुई है। भक्त कवियों ने नारी को आध्यात्मिक मार्ग की बाधा के रूप देखा है। इसलिए उसे भ्रष्ट करने वाली माया का ही साक्षत् रूप माना है उसमें तीव्र आकर्षण है।

डॉ. अलका सरावगी के 'कलिकथा वाया वायपास' 'षेषकादम्बरी' 'कोई बात नही ' तथा एक ब्रेक के बाद उपन्यासों में हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं का मिश्रण है।

अलका सरावगी ने अपने काव्य में नारी विमर्ष का चित्रण किया है। जिसमें नारी हर कठिन से कठिन परिस्थिति में तैयार रहती है नारी हर समस्या से लड़ती है। चाहे वो समस्या किसी भी तरह की हो उस समस्या से लड़ने के लिये नारी तत्पर है।

नारी समाज की जन्मदात्री रही हैं। उसका समाज से घनिष्ट सम्बध रहा है एक तरफ नारी की अवेहलना की गई है। तो दूसरी तरफ नारी को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है।

अलका जी ने अपने कथा–साहित्य में अलका जी के ''शेष कादम्बरी'' उपन्यास में रूबी गुप्ता की नातिन कादम्बरी भी अपनी तरह जीवन जीती है।

निष्कर्ष

अलका जी के उपन्यासों में मारवाड़ी समाज की एक नही, दो नही पाँच–पाँच पीढ़ियों की भिन्न – भिन्न शैलियों, समाज के गठन, मानस के अंतर्गठन की कथाओं के जरिये जिस तरह चित्रित किया गया है। वह चकित कर देने वाला है। आधुनिक महिला कथाकारों में अलका जी ने अपनी अलग पहचान बना ली है। और नारी विमर्ष का चित्रण किया है। अलका जी ने अपने उपन्यासों में नारी का चित्रण किया है। जैसे जानकीदास तेजपाल मेनषन, कोई बात नही, ''एक ब्रेक के बाद'' आदि।

आधुनिक महिला कथाकारों ने आज के समाज में अपनी अलग पहचान बना ली।

संदर्भ ग्रन्थ सूंची

1. *कायाकल्प – प्रेमचन्द पृष्ठ 254*
2. *कलि – कथा वाया बाईपास डॉ. अलका सरावगी राजकमल प्रकाषन नई दिल्ली 1998*
3. *''कोई बात नही'' अलका सरावगी*
4. *'एक ब्रेक के बाद' अलका सरावगी राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण पृष्ठ 10*
5. *शेष कादम्बरी डॉ. अलका सरावगी*
6. *जानकीदास तेजपाल मैनषन राजकमल प्रकाषन नई दिल्ली, पटना इलाहाबाद।*
7. *अल्टेवर ने वैदिक काल 2500 ई.पू. से 1500 ई. माना है।*
8. *सूरदास – सुरसुधाः ''काम क्रोध और पृष्ठ 27,8,*